ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

फिल्मानुवाद में आने वाली बाधाएँ

Obstacles In Film Translation

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

देवी प्रियंका सिंह
शोधार्थी
भारतीय भाषा केंद्र,
जवाहर लाल नेहरू
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
भारत

सारांश

भारत विविधताओं से भरा हुआ एक देश है, जहां भौगोलिक विविधता के साथ–साथ भाषाई और सांस्कृतिक विविधता भी विद्यमान है। भाषाई विविधता के बावजूद एक समन्वित स्थिति अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। भाषाई विविधता की बड़ी खाई होने के बाद भी लोग दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में देखना पसंद करते हैं। यह विदित है कि फिल्में समाज का दर्पण होतीं है , जिसमें उस विशेष समाज के भाषिक और सांस्कृतिक तत्त्व भी समाहित होते हैं। एक समाज के विशिष्ट भाषिक और सांस्कृतिक तत्वों को लोगों तक पहुंचाने में अनुवाद की भूमिका व्यापक है। बाजार की दृष्टि से आज फिल्मानुवाद का दायरा बहुत बढ़ गया है। आज ना केवल अंग्रेजी से स्थानीय भाषाओं में अनूदित फिल्मों का बाजार है बल्कि, अन्य भाषाओं का बाजार भी वैश्विक हो गया है और बहुत कम राशि से स्थानीय(लक्ष्य) भाषा में एक फिल्म तैयार हो जाती है और उसे पर्याप्त दर्शक भी मिल जाते हैं। फिल्मानुवाद दर्शकों के समक्ष डबिंग और सबटाइटिलिंग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। फिल्मानुवाद की यह प्रक्रिया विभिन्न तकनीकी और भाषिक चुनौतियों से भरी हुई होती है। हालांकि इस प्रक्रिया में अनुवादक के साथ–साथ एक पूरी टीम शामिल होती है। परंतु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि पुनर्प्रस्तुतीकरण में दर्शक वही एहसास महसूस कर पाएंगे, जो मूल रूप से देखने के समय करते हैं।

India is a country full of diversities, where linguistic and cultural diversity exists along with geographical diversity. Despite the linguistic diversity, a position of solidarity is possible only through translation. Despite the large gap in linguistic diversity, people like to watch films in other regional languages. It is known that films are a mirror of society in which linguistic and cultural elements of that particular society are also included. The role of translation is widespread in bringing the linguistic and cultural elements of that particular society to the people. Today, the scope of film Translation has increased greatly in terms of market. Today, not only is there a market for films translated from English, but also the market of other languages has become global and a small amount of money makes a film in the regional(target) language and gets enough viewers. Film Translation is presented to the audience in the form of dubbing and subtitling. This process of film Translation is filled with various technical and linguistic challenges. Although , an entire team along with the translator is involved in the process, still it cannot be said that viewers will get the same feeling in representation, as they have while watching the original.

मुख्य शब्द : अनुवाद, फिल्म, डबिंग, सबटाइटिलिंग
Translation, Film, Dubbing, Subtitling.

प्रस्तावना

अनुवाद एक ऐसी विधा है जो अनेकानेक क्षेत्रों को अपने आवरण से ढँके हुए है। अनुवाद ने दो व्यक्तियों, दो राष्ट्रों और दो भाषाओं के बीच में एक सेतु का कार्य किया है और इसी सेतु ने दूरियों को समेटा है चाहे भाषायी स्तर हो या सांस्कृतिक स्तर या फिर राष्ट्र की बात है। साहित्यानुवाद ने एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा के साहित्य प्रेमियों तक पहुँचाया है। विदेशी भाषा के साहित्य को जानने के लिए आज यह आवश्यक नहीं है कि हम उस भाषा के जानकार हो ठीक उसी प्रकार, आज हम विदेशी भाषा की किसी फिल्म का आनन्द उठाने से भी वंचित नहीं रह सकते हैं । विदेशी फिल्म प्रेमियों के बीच

की दूरी 'डबिंग' और 'सब–टाइटलिंग' ने पूरी की है। प्रस्तुत शोध पत्र का केन्द्र मुख्य रूप फिल्मानुवाद की समस्याएँ है। फिल्मों के लिए जो लिखित भाषांतरण किया जाता है उसे 'सबटाइटलिंग' नाम से जाना जाता है और जो वाचिक रूप से होता है, उसे अंग्रेजी में ''डबिंग'' के नाम से जाना जाता है। 'डबिंग' को हम एक प्रकार से लक्ष्य भाषा में निर्वचन की संज्ञा दे सकते हैं, क्योंकि निर्वचन भी मौखिक अनुवाद है, जिसमें वक्ता और श्रोता होता हैं। निर्वचन में वक्ता और श्रोता के बीच में निर्वाचक एक माध्यम होता है, जबकि डबिंग में दर्शक और फिल्म, वक्ता और श्रोता की भूमिका में होते हैं।

फिल्मानुवाद के दो रूप सबसे अधिक प्रचलित हैं पहला सबटाइटिलिंग के माध्यम से और दूसरा डबिंग के माध्यम से। फिल्मानुवाद के लिए डबिंग माध्यम में लक्ष्य भाषा के दर्शकों को उसकी अपनी भाषा में अभिमुख कराना है एवं संवादों को इस प्रकार समायोजित करना पड़ता है कि जिससे कि उन्हें महसूस हो कि संवादों का वाचन लक्ष्य भाषा अर्थात दर्शक की अपनी भाषा में किया जा रहा है।

फिल्मानुवाद की जो दूसरी प्रक्रिया होती है सबटाइटिलिंग के माध्यम से। सबटाइटिलिंग में स्रोत भाषा के संवादों को लक्ष्य भाषा में एक वाकपट्टी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है परन्तु इस प्रकार के अनुवाद में दर्शक को यह आभास हमेशा होता रहता है कि वह एक भाषेतर फिल्म को देख रहा है इसके विपरीत दर्शक जब एक 'डब्ड फिल्म' देख रहा होता है। वहाँ वह भाषाभेद को भूलकर फिल्म के साथ स्वयं को आत्मसात कर लेता है। 'डबिंग' की प्रक्रिया सिर्फ भाषेतर होती है यानि स्रोतभाषा से लक्ष्य भाषा परन्तु सबटाइटिलिंग भाषागत और भाषेतर दोनों ही प्रकार का हो सकता है। भाषागत सबटाइटिलिंग ऐसे दर्शकों के लिए भी की जाती है, जिनकी श्रवण शक्ति कम या क्षीण होती है। भाषा शिक्षण के लिए भी सब–टाइटलिंग का प्रयोग किया जाता है। दर्शक जब अपनी भाषा में डब की हुई फिल्म विमुग्ध भाव से देखते है, तो एक अपनत्व भाव से गुजरते है, जबकि सबटाइटिलिंग में इसका अभाव होता है।

इन दोनों प्रकारों के अलावा फिल्मानुवाद का एक और रूप वॉइस रीओवर भी प्रचलित है जिसमें स्रोत भाषा की ध्वनि को मन्द कर, लक्ष्य भाषा के संवादों को आरोपित किया जाता है जिससे लक्ष्य भाषा का दर्शक उन संवादों को सुन व समझ सके और ओष्ठ संचालन और दृश्य क्रम से तालमेल बैठाने का बहुत ज्यादा प्रयास नहीं किया जाता है । इसमें संप्रेषण मुख्य उद्देश्य रहता है। अपेक्षागत यह डबिंग से सस्ती प्रक्रिया है।

मूक फिल्मों के समय फिल्मों का अनुवाद करना उतना कठिन नहीं था क्योंकि उस समय फिल्मों में सिर्फ 'इन्टर–टाइटल' हुआ करते थे जिन्हें आसानी से अनूदित किया जा सकता था। इसके अलावा लक्ष्य पाठ में प्रस्तुत करना भी आसान था। समस्या 1920 के दशक में सामने आई जब सवाक फिल्मों का उदय हुआ। सवाक फिल्मों को किसी अन्य भाषा में प्रस्तुत करने के लिए एक अमेरिकन फिल्म कंपनी ने उसी फिल्म को, उसी सेट्स के साथ लक्ष्य भाषा से संबद्ध कलाकारों के साथ फिर से शूट किया। परन्तु यह प्रयास तर्कसंगत न होने के साथ काफी महँगा भी था। हालांकि आज भी इस प्रक्रिया को अपनाया जा रहा है, जिसे रीमेक कहते हैं। रीमेक एक महंगी प्रक्रिया है, जिसमें एक नई फिल्म बनाने जितनी व्यवस्था, समय और धन की आवश्यकता होती है। रीमेक एक प्रकार से अनुवाद का ही एक रूप है लेकिन नए कलाकारों के साथ फिल्म का पुन: प्रस्तुतीकरण एक महंगी प्रक्रिया है। इसलिए प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ डबिंग का सहारा लिया जाता है, जिससे फिल्म डबिंग के बावजूद खूबसूरत बन पड़ती है।

जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्पेन, ऑस्ट्रिया, स्विट्जरलैंड, हंगरी, चेक गणराज्य, स्लोवाकिया, तुर्की, ब्राजील, चीन, जापान, अधिकांश एशियाई देश,और कुछ उत्तर–अफ्रीकी देशों, जिनमें से एक है, जहां डबिंग को प्रमुखता दी जाती है। डबिंग प्रक्रिया में पहला चरण अनुवाद है और पहली भूमिका अनुवादक की होती है। इसमें अनुवादक को फिल्म के संवादों को लक्ष्य भाषा में अनूदित करना होता है। लेखक मनोहर श्याम जोशी ने संवादों के अनुवाद करते अनुवादक को चुनौती को देखते हुए कहते हैं कि "हर अंग्रेजी संवाद की जगह कोई ऐसा हिंदी संवाद लिखा जाए जो उतने ही समय में बोला जा सकता हो, और उसे इस तरह लिखे की जब उसे अंग्रेजी बोलने वाले पात्र के मुंह में डाल दिया जाए तो उसके होठों का खुलना बंद होना उच्चरित शब्दों से मेल खाए और उसकी भाव भंगिमा भी उसके अनुरूप रहे।"

डबिंग की यह पहली चुनौती होती है कि लक्ष्य भाषा का संवाद भी उतनी ही अवधि का हो, जितनी अवधि का स्रोतभाषा का है। अगर अवधि में सामंजस्य न रहे तो, संवाद समाप्त होने के बाद भी होठ गति मे रहेंगे, जो कि निश्चित रूप से दर्शकों को अवास्तविक लगेगा। हर भाषा की अपनी अलग प्रकृति होती है और यह देखा गया है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने के क्रम में शब्दों का लोप और आगमन सामान्य है। कई बार उचित समतुल्यों को स्थापित करने के प्रयास में भी अनुवाद की अवधि लंबी हो जाती है। इसलिए डबिंग के दौरान मूल संवाद के जितने ही शब्द अनुवाद में रखें और कोशिश की जाए कि बोलने के दौरान उतनी ही समयावधि का प्रयोग हो। मिसाल के लिए अगर आप हिंदी शब्द 'हाँ' को भी एक ही गिनेंगे और अंग्रेजी शब्द 'ब्युटीफुल' को भी एक ही गिनेंगे तो अवधि निश्चित रूप से प्रभावित होगी। अनुवादक को यह ध्यान में रखना होगा, कि लक्ष्य भाषा में अनूदित संवाद में प्रयोग शब्दों का अनुपात, श्रोत भाषा के शब्दों के अनुपात से मेल खाता हो।

कई बार शब्दों के अनुपात में संगति होने के बाद भी समस्या उत्पन्न हो जाती हैं। प्रत्येक भाषा के बोलने की गति भिन्न होती है। अक्सर यह पाया गया है कि जब दक्षिण भारतीय फिल्मों की जब हिन्दी में डबिंग की जाती है, तो हिन्दी बहुत ही हड़बड़ी में बोली हुई प्रतीत होती है। इसलिए अनुवादक संवादों में शब्दों की संख्या उतनी ही रखे, जिससे लक्षित भाषा में अस्वाभाविक न लगे और संवाद निश्चित अवधि में पूर्ण हो सके।

"डबिंग के दौरान वाणी देने वाले कलाकारों को संवादों के समय और होठों की गति के साथ ताल–मेल बैठाना होता है।" (चूम, फ्रेड्रिक, 2015)

स्पष्ट है कि डबिंग में लिपसिकिंग एक बेहद महत्त्वपूर्ण घटक है। असंतुलित लिपसिंकिंग उत्कृष्ट अनुवाद होने बाद भी दर्शकों को लुभाने में सफल नहीं होगी। इसलिए अनुवादक के लिए चुनौती होती है कि ऐसे संवादों का चयन किया जाए, जिसमें लिपसिंक हो सके। इस हेतु अनुवादक निश्चित रूप से अनुवाद में कलात्मक स्वतन्त्रता लेते हैं। क्योंकि शाब्दिक अनुवाद के साथ, लिपसिंक की कसौटी पर खरा उतरना असंभव प्रतीत होता है।

अनुवादक की चुनौतियां यही समाप्त नहीं होती, शब्दों की सीमा के अलावा, शब्दों का चयन भी एक गम्भीर समस्या है। फिल्मों के अनुवाद में सहज और सरल शब्दावली ही प्रयोग करनी चाहिए। संवाद बोल–चाल की ही भाषा में हो, लेकिन संप्रेषणीय हौ।

अनुवादक द्वारा फिल्म की सामग्री के अनुवाद के पश्चात दूसरा चरण उन संवादों की रिकॉर्डिंग का होता है। संवादों की रिकॉर्डिंग डबिंग अर्टिस्ट के साथ की जाती है। आर्टिस्टों का चयन फिल्म के चरित्र के अनुसार किया जाता है, जिससे मूल फिल्म की आत्मा को बचाया जा सकै। अगर चरित्र खूंखार है या फिर मासूम है, तो उसके चरित्र के समान ही आवाज वाले अर्टिस्ट का चयन किया जाता है। आर्टिस्ट के चुनाव के समय पर्दे पर दिखने वाले किरदार की उम्र को ध्यान में रखा जाता है, कहीं ऐसा न हो कि किरदार की उम्र अधेड़ हैं और डबिंग कलाकार युवा है, तो निश्चय ही उसकी आवाज में वो परिपक्वता नहीं होगी। अतः डबिंग आर्टिस्ट की आवाज भी उसी उम्र से मेल खाती हो, जिससे दर्शक तालमेल बैठा सके, अन्यथा दर्शक को सहज महसूस नहीं होगा।

कई बार कुछ बड़े बजट की फिल्मों के लिए डबिंग अर्टिस्ट के रूप में लक्ष्य भाषा के स्थापित कलाकारों को भी चुना जाता है। जैसे– हॉलीवुड की फिल्म 'द लायन किंग' की हिंदी समेत तमिल और तेलुगु में डबिंग की गयी । हिंदी डबिंग के लिए फिल्म के मुख्य किरदार "मुफासा" और उसके बेटे "सिम्बा" के लिए क्रमशः हिंदी सिनेमा के किंग शाहरुख खान और उनके बेटे आर्यन की आवाज का प्रयोग हिंदी डबिंग के लिए किया गया। इसके अलावा फिल्म के नेगेटिव किरदार "स्कार" के लिए बॉलीवुड फिल्मों में अक्सर खलनायक का किरदार निभाने वाले आशीष विद्यार्थी की आवाज ली गई। इसके साथ–साथ फिल्म के अन्य किरदारों के लिए भी हिंदी सिनेमा के प्रसिद्ध कलाकारों की आवाज ली गई। ठीक उसी प्रकार दक्षिणी भाषाओं के डबिंग के लिए दक्षिण भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता अरविंद स्वामी और सिद्धार्थ की आवाज को लिया गया। बाजारवाद को देखते हुए, यह युक्ति अच्छी प्रतीत होती है। चूंकि हिंदी दर्शकों के लिए पसंदीदा अभिनेता को नायक और एक जानी–पहचानी आवाज में खलनायक को सुनना, निश्चित रूप से फिल्म से बाँधता है। यह जुड़ाव फिल्म की सफलता में एक अहम भूमिका निभाता है। हालांकि इस प्रकार की डबिंग में फिल्म का बजट साधारण डबिंग से लगभग 10 गुना तक बढ़ जाता है। दर्शक की नब्ज को समझते हुए प्रोडुसर खर्च की चिंता तनिक भी नहीं करते हैं। एक अच्छी डबिंग से फिल्म न केवल मूल भाषा में बल्कि दूसरे देशों में भी अच्छी कमाई करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

फिल्मानुवाद में आने वाली समस्याओं का विश्लेषण ।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद प्रक्रिया एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है। अनुवाद चाहे किसी सहित्यिक रचना का हो, कथात्मक हो, वैज्ञानिक या तकनीकी क्षेत्र से सम्बंधित है। किसी भी विधा के अनुवाद के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों में ही पारंगत होना, एक अनिवार्य अहर्ता है। अन्य विधाओं में अनुवादक ही केवल संलिप्त होता है , किंतु डबिंग प्रकिया में एक अनुवादक के साथ–साथ, आवाज देने वाले कलाकार, वीडियो संपादक और अन्य तकनीकी सम्पादक हिस्सा होते है। इन सभी के सामूहिक श्रम से ही दर्शकों के समक्ष एक विदेशी भाषा की फिल्म, दर्शक की भाषा में सामने होती है। अतः डबिंग की भाषा दर्शकों को जोड़ने वाली होनी चाहिए। दर्शक जब दूसरी भाषा का सिनेमा देखे, तो उसे मूल जैसा ही आनंद प्राप्त हो। भाषा के साथ–साथ होठों का तालमेल एक अनिवार्य घटक है, जो डबिंग को खूबसूरत और फिल्म को मूल जैसी संरचना देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Gilbert Chee Fun Fong] Dubbing and Subtitling inA World ConteÛt Publisher Chinese University Press]*
2. *Gambier] Yves (ed-) (1997)] Language Transfer and Audiovisual Communication-A Bibliography] Centre for Translation and Interpretation] Univ- of Turku*
3. *Delabastita] D- 1990] 'Translation and the Mass Media' in Translation] History and Culture]eds- S- Bassnett & A- Lefevere] Pinter] London and NY-*
4. *Gambier] Y & Gottlieb] H (eds) - 2001] ¼Multi½ Media Translation] John Benjamins] Amsterdam / Philadelphia-*
5. *Gottlieb] Henrik (2001) Screen Translation- SiÛ studies in subtitling] dubbing and voice&over] Center for Translation Studies] Department of English] Univ- of Copenhagen*
6. *Orero] P (ed)- 2004] Topics in Audiovisual Translation] John Benjamins] Amsterdam / Philadelphia-*
7. *Díaz Cintas] Jorge & Anderman] Gunilla (eds) (2008)] Audiovisual Translation: Language Transfer on Screen- Basingstoke: Palgrave Macmillan-*
8. *Diaz Cintas] Jorge (ed-) 2009- New Trends in Audiovisual Translation- Bristol: Multilingual Matters- 216 p*
9. *https://www-researchgate-net/publication/288153012_Screen_Translation_Dubbing*
10. *जोशी, मनोहर श्याम (2018), पटकथा लेखन एक परिचय*
11. *अनुवाद पत्रिका अंक 85 ,संपादक – नीता गुप्ता,भारतीय अनुवाद परिषद*